आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/01/2022; Published:31/01/2023

ऊपर नीचे... ऊपर नी....

प्रो. प्रमोद कोवप्रत

मूल: एल. तोमस कुट्टी (मलयालम)

मनुष्य
कीडों - सा
मर मिटते हैं
ऐसा सुने उपमान
ठहाका लगा-लगाते
काँटों का मुकुट
बिखर - पनप गया

छोटा है
बड़ा
बडे सब
टूटकर
चूर हो जायेंगे।

किस केलिए
कहाँ केलिए
यह पलायन ?
अयथार्थ निर्मिति में,
दंत कथाओं की
माया में
क्विक्ज़ोट के
परछाई युद्ध।

तेरे पाप
हाथ धोने को कहते
समुंदर बीच
जहाज़ में अकेले पडने
भीड़
शोर मचाती ।

भय
पूरा ढकता है
देह बचाना है
झुंड छोड
अकेला होना है ।

कल के
संस्कार, पेशा
दोस्त, रिश्तेदार
परिवार.....
अपने आप से तक
पृथक होना है
अन्य
नरक ही तो !

खयाल रखना
सिर्फ "मैं को"
प्राणी द्वारा अनुपालित
मूलवृत्ति संबंध से कटे
सिर्फ
देहमात्र का ।

****